International Journal of Sanskrit Research 2017; 3(3): 145-151

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2017; 3(3): 145-151
© 2017 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 25-03-2017
Accepted: 26-04-2017

Jalaj Kumar
Department of Sanskrit
University of Delhi,
Delhi, India

Correspondence
Jalaj Kumar
Department of Sanskrit
University of Delhi, Delhi,
India

ऋग्वेद का कालनिर्धारण

Jalaj Kumar

प्रस्तावना

ऋग्वेद का रचनाकाल-निर्धारण वैदिक साहित्य इतिहास की एक जटिल समस्या है। विभिन्न विद्वानों ने भाषा, रचनाशैली, धर्म एवं दर्शन, भूगर्भशास्त्र, ज्योतिष, उत्खनन में प्राप्त सामग्री, अभिलेख आदि के आधार पर ऋग्वेद का रचना काल निर्धारित करने का प्रयास किया है, किन्तु इनसे अभी तक कोई सर्वमान्य रचनाकाल निर्धारित नहीं हो सका है।

(क) शिलालेख-

शिलालेखों को आधार मानकर किया गया काल निर्धारण प्राचीन फ़ारसी शिलालेखों में प्राप्त राजाओं और भारतीय राजाओं के नामों का मिलान करके किया है।

1. प्रो. जी. ह्यूसिंग [1] प्राचीन फ़ारसी शिलालेखों में प्राप्त राजाओं के नाम इस प्रकार तोडते मरोडते हैं कि वे भारतीय राजाओं के नामों में परिवर्तित हो जाते हैं। इनके अनुसार लगभग 1000 ई.पू. में भारतीय आरमेनिया से अफ़गानिस्तान आये। ऋग्वेद का रचनास्थान यही अफ़गानिस्तान है। अपने मत की पुष्टि के लिये वे ऋग्वेद के वर्णित कई दृश्यों की तुलना अफ़गानिस्तान के दृश्यों से करते हैं। इस प्रकार जी. ह्यूसिंग के अनुसार ऋग्वेद का रचनाकाल 1000 ई.पू. का है।

(ख) भाषाविज्ञान -

भाषा विज्ञान को आधार मानकर ऋग्वेद का काल निर्धारण ऋग्वेद और अवेस्ता के परस्पर भाषागत तथा धर्मगत सम्बन्ध को आधार मानकर किया गया है।

1. मैकडानल [2] ने वेद और अवेस्ता के परस्पर भाषागत तथा धर्मगत सम्बन्ध को आधार बनाया। मैकडानल का कहना था कि अवेस्ता की भाषा का और उसमें प्रतिपादित धर्म का ऋग्वेद की भाषा और उसमें प्रतिपादित धर्म से घनिष्ट सम्बन्ध है। यदि ऋग्वेद तथा अवेस्ता की भाषा का तुलनात्मक अध्ययन किया जाये तो मालूम होगा कि दोनों में जो अन्तर है वह अवेस्ता की 500 वर्ष पूर्व बोली जाने अवस्था में बिल्कुल नहीं रहा होगा। अवेस्ता का प्राचीनतम भाग 800 ई.पू. का है। इस प्रकार ऋग्वेद की कविताओं का प्रारम्भ इससे 500 वर्ष पूर्व मानने पर उसका समय मैकडानल के अनुसार 1300 ई.पू. सिद्ध होता है।

(ग) ऐतिहासिक –

ऐतिहासिक साक्ष्यों के आधार पर ऋग्वेद का काल निर्धारण बुद्ध और महावीर की स्थिति को देखकर किया गया है। वेदों की उपस्थिति बुद्ध और महावीर से पूर्व ही थी, क्योंकि बुद्ध तथा महावीर ने वेदों के नाम पर जो पाखण्ड हो रहे थे उनका विरोध किया था। ऐतिहासिक साक्ष्यों के आधार पर काल निर्धारण मैक्समूलर, ह्विटनी, केगी तथा विन्टरनिट्ज़ ने किया है।

1. डॉ. मैक्समूलर [3] ने ग्रीस इतिहासकारों को प्रमाण मानकर (ऐतिहासिक साक्ष्य के आधार पर) गौतम बुद्ध का निर्वाणकाल 477 ई.पूर्व माना है, जोकि चन्द्रगुप्त के राजसिंहासन पर बैठने से 162 वर्ष पूर्व का है। बौद्ध धर्म की स्थापना से पूर्व अर्थात् ईसा से लगभग 600 वर्ष पूर्व सम्पूर्ण वैदिक साहित्य की रचना हो चुकी होगी, क्योंकि गौतम बुद्ध ने वैदिक संस्कृति का घोर विरोध किया था। मैक्समूलर ने वैदिक साहित्य को चार कालों में विभाजित किया – 1) छन्दकाल, 2) मन्त्रकाल, 3) ब्राह्मणकाल तथा 4) सूत्रकाल। मन्त्रकाल की मुख्य प्रवृत्ति पूर्वयुग की रचनाओं को संकलित करना था, किन्तु जहाँ वे प्राचीन ऋषियों-कवियों की रचनाओं को लोगों के मुख से सुनकर संकलित करते थे, वहाँ उनमें संशोधन भी करते थे। मैक्समूलर का कहना है कि प्राचीन ऋषियों की रचनाओं को संकलित करने, उनका वर्गीकरण करने तथा उनके अनुकरण पर नये मन्त्रों की रचना के लिये 200 वर्षों अधिक समय नहीं लगा होगा। ऋग्वेद में अर्वाचीन कवियों की वंशावलियों तथा संकलनकर्ताओं के भी दो वर्गों को देखते हुए मैक्समूलर ने मन्त्रकाल को 1000 से 800 ई.पूर्व तक माना।

   वैदिक काव्यधारा के इतिहास में मैक्समूलर ने मन्त्रकाल से पूर्व एक छन्दकाल की सत्ता स्वीकार की। इस छन्दकाल की भी रचनायें ऋग्वेद संहिता में संकलित हैं। मैक्समूलर ने इस छन्दःकाल के लिये भी 200 वर्षों का समय स्वीकार कर इसकी अवधी 1200 ई.पूर्व तक मानी। इस प्रकार मैक्समूलर के अनुसार सम्पूर्ण वैदिक साहित्य- सूत्र-साहित्य से लेकर प्राचीनतम ऋक्-मन्त्र तक- एक सहस्त्र वर्षों अर्थात् 1200 ई.पू. में रचा गया।

   बाद में मैक्समूलर [4] ने स्वयं अपनी इस त्रुटि को स्वीकार करते हुये उसने 1890 में 'जिफोर्ड व्याख्यानमाला' में स्पष्ट रूप से कहा है कि – "हम वेदों की रचना के समय की सीमा निश्चित करने की आशा नहीं कर सकते। वैदिक मन्त्र 1000 या 1500 या 2000 या 3000 ईसा वर्ष पूर्व रचे गये थे, पृथ्वी पर कोई भी ऐसी शक्ति नहीं है जो इसका कभी भी निर्णय कर सकेगी।"
2. ह्विटनी (whitney) यद्यपि मैक्समूलर के वैदिक साहित्य सम्बन्धी चार कालों को तो स्वीकार करते हैं किन्तु वेदों का समय 2000 से 1500 ईसा पूर्व का मानते हैं। केगी (Kaegi) भी इसी मत को स्वीकार करते हैं।
3. डॉ. विन्टरनिट्ज़ का मत[5] है कि महावीर और बुद्ध ने वेदों की स्थिति अपने से पूर्व मानी है। इस भाँति यह अन्तिम सीमा है, जिससे हम आगे नहीं बढ सकते हैं। सम्पूर्ण वैदिक साहित्य के विकास के लिए कम से कम 2000 से 2500 वर्षों का समय अपेक्षित है। ऐसी स्थिति में यह स्वीकार करना होगा कि वैदिक साहित्य का प्रारम्भ 2000 से 2500 वर्ष ईसा पूर्व रहा होगा और इसका अन्तिम काल 750 ई.पू. और 500 ई.पू. के मध्य रहा होगा। [6]

(घ) अभिलेखशास्त्र –

अभिलेखशास्त्र को आधार बनाकर बोगाज़कोई नामक स्थान में खुदाई करके निकाली गईं वस्तुओं के आधार पर ह्यूगो विंकलर, हर्टल, आर. जी. भण्डारकर, एडवर्ड मेयर तथा राधा मुखर्जी ने किया है।

1. हर्टल [7] ने ऋग्वेद का निर्माण उत्तर पश्चिम भारत में नहीं बल्कि ईरान में माना है। उसका काल जरथ्रुष्ट (500 ई.पू.) के आस पास माना है।
2. प्रो. एडवर्ड मेयर [8] के मत से आदिकाल के निश्चित समय का निर्देश नहीं किया गया, जब ऋग्वैदिक ऋचाओं की रचना की गई। उनका मात्र इतना कहना था कि ऋग्वैदिक ऋचाओं की रचना 1500 ई.पू. से पहले हुई, ऋग्वेद का समय निर्धारित करने के लिये पर्याप्त साक्ष्य नहीं है।
3. रामकृष्ण गोपाल भण्डारकर [9] का मानना है कि मेसोपोटामिया में ही ऋग्वेद के 10 मण्डलों तथा अथर्ववेद के 20 काण्डों में जो सूक्त हैं, उन सबकी रचना उस समय हो चुकी थी जबकि आर्य अपने मूलस्थान मेसोपोटामिया में ही निवास करते थे। भण्डारकर का मत है कि बोगज़कोई अभिलेख से पूर्व अर्थात् 1500 ई.पू. तक आर्य भारत में कई विभक्त जातियों के रूप में

प्रकट हो चुके थे, किन्तु जो असीरियावासियों के पडोसी के रूप में रह रहे थे, वे 1500 ई.पू. के बाद भारत में आये। इस प्रकार भण्डारकर के अनुसार ऋग्वेद की रचना 1500 ई.पू. में हो चुकी थी।

4. सन् 1907 में ह्यूगो विंकलर [10] ने एशियामाइनर के अन्तर्गत बोगाज़कोई नामक स्थान पर खुदाई करवाई जिसमें बहुत सी चीजें निकालीं। प्राचीन हित्ती साम्राज्य की राजधानी के दबे अवशेषों में कुछ मिट्टी की मुद्रायें भी मिलीं हैं, जिन पर 14 वीं सदी ई.पू. के शुरु में हित्तियों के राजा 'सुब्बीलूलिउम' तथा मित्तानियों के राजा **'**मत्तीउअज**'** के बीच हुई संधि का उल्लेख है। एक राजकेय अनुशासन के रुप में बेबीलोनियन तथा हित्ती देवताओं के साथ मित्तानियों के देवता मित्र, वरुण, इन्द्र, तथा नासत्या को पुकारा है। इस शिलालेख का समय 1400 ई.पू. है। अतः वैदिक सभ्यता का उदय उससे पूर्व ही होगा, और वेदों का समय भी उससे पूर्व ही रहा होगा। अतः इन्होंने 2000 ई.पू. ऋग्वेद का समय माना है।
5. डॉ. राधा मुखर्जी [11] का मत है कि बोगजकोई नामक स्थान में 1400 ई.पू. के कुछ अभिलेख मिले हैं**,** जिनमें खत्ती **(**Hitties**)** और मितानी **(**Mitani**)** जातियों के बीच हुई सन्धि का उल्लेख है। वहाँ सन्धि की शर्तों की रक्षा के लिए साक्षी रूप में दिये गये देवताओं के नाम इस प्रकार हैं :-
6. 'इलानि मित्र उरुवन इन्दार नासतिय'
ये नाम ऋग्वेद के इला, मित्र, वरुण, इन्द्र और दोनों नासत्य देवताओं से मिलते हैं। बोगजकोई अभिलेखों के ही समय के कुछ प्रसिद्ध पत्र तल्ल अल्ल् अमरना गाँव में मिले थे, जिनमें कुछ मितानी राजाओं के नाम संस्कृत नामों से मिलते हैं। बेबीलोनिया पर राज्य करने वाले (लगभग 1746 – 1180 ई. पूर्व) कस्सी (kassites) राजाओं के नाम संस्कृत में भी मिलते हैं जैसे शुरिअस् (सूर्य), मर्यतस (मरुतस्), इत्यादि। अतः लगभग 2500 ई.पू. में ऋग्वेद का काल मानना उचित होगा।

(ङ) महाकाव्य ग्रन्थों के आधार पर-

ग्रन्थों के साक्ष्यों को आधार मान कर किये गये काल निर्धारण का आधार रामायण**,** महाभारत तथा पुराण हैं।

1. डी.आर. मंकड [12] ने रामायण**,** महाभारत तथा पुराणों में उल्लिखित ऋषिनामों का सम्बन्ध वैदिक ऋषियों से जोडकर ऋग्वेद के रचनाकाल-निर्धारण का प्रयास किया है। उन्होंने ऋग्वैदिक सूक्तों की रचना चार कालों में मानी है- पूर्वरामकाल, रामकाल, उत्तर-रामकाल तथा महाभारतकाल। ऋग्वेद के 1028 सूक्तों में से 774 सूक्त रामकाल के, 48 पूर्व रामकाल के, 101 उत्तर रामकाल के, 23 महाभारत काल के लिखे गये हैं। 72 सूक्त ऐसे हैं जिनके विषय में सन्देह है। राम युधिष्ठिर से 30 पीढी पूर्व के हैं। युधिष्ठिर के राज्य के अन्त का समय 3201 ई.पू. है। एक पीढी में 25 वर्ष की अवधी मानकर 30 पीढी में 750 वर्ष होते हैं। इस प्रकार राम युधिष्ठिर से 750 वर्ष पूर्व के अर्थात् 3750 ई.पू. के हैं। यही रामकाल है। इसी समय ऋग्वेद के प्रमुख ऋषि हुये और उन्होंने ऋग्वेद की रचना की।

(च) ज्योतिष -

ज्योतिष के आधार पर कालनिर्धारण को हॉग, याकोबी, शंकर बालकृष्ण दीक्षित, लोक मान्य बाल गंगाधर तिलक तथा ऋग्वेद के साक्ष्यों के आधार पर कई बिन्दुओं में प्रस्तुत किया है।

1. प्रो. हॉग [13] ने वेदाङ्ग ज्योतिष प्रस्तुत पद्य उद्धृत किया है जिसमें श्रविष्ठा के आदि में सूर्य और चन्द्रमा के उत्तर की ओर घूमने का वर्णन मिलता है –

" प्रपद्येते श्रविष्ठादौ सूर्यचन्द्रमसावुदक्।
सार्पार्धे दक्षिणार्कस्तु माघश्रावणियोः सदा ॥"

इस पद्य के आधार पर उन्होंने दो निष्कर्ष निकाले हैं। प्रथम तो यह कि 1200 ई.पू. में भी भारतीयों का ज्योतिष ज्ञान अत्यधिक बढा हुआ था और द्वितीय यह कि प्रायः समस्त प्रमुख क्रिया कलापों का समावेश तब तक ब्राह्मण ग्रन्थों में हो चुका था। इस प्रकार प्रो**.** हॉग के अनुसार ब्राह्मण ग्रन्थों का रचना काल 1400 ई.पू. का है और 500-600 वर्ष संहिताओं की रचना के लिए मानकर ऋग्वेद का रचना काल 2000 ई.पू. का माना है।
2. डॉ. याकोबी ने ज्योतिर्विज्ञान का आधार ग्रहण करते हुए लिखा है कि ब्राह्मण ग्रन्थों में वर्णन मिलता है कि उस समय कृतिका नक्षत्र उदित था, जिसका समय अयन-गति की गणना से 2500 ई.पू. आता है। याकोबी ने विवाह प्रकरण में उल्लिखित 'ध्रुव के समान स्थिर हो ' [14] (ध्रुवं इव स्थिरीभव) वाक्य में आये हुए ध्रुव शब्द की व्याख्या ज्योतिर्विज्ञान के आधार पर की तथा उक्त नक्षत्र की ध्रुव स्थिति लगभग 2780 ई**.**पूर्व निश्चित की। ऋग्वेद के विवाह-सूक्त में ध्रुव-दर्शन की प्रथा की ओर

सकेंत नहीं किया या गया है। अतः स्पष्ट है ऋग्वेद का समय [15] 4500 ई.पू. से पहले का हो सकता है। [16]

3. श्री शंकर बालकृष्ण दीक्षित [17] ने शतपथ **[18]** ब्राह्मण में उपलब्ध अन्तः साक्ष्य के आधार पर यह सिद्ध किया है शतपथ ब्राह्मण की रचना के समय कृत्तिकायें ठीक पूर्वी बिन्दु पर उदित होती थीं। आजकल वसन्त-सम्पात पूर्वा भाद्रपद के चतुर्थ चरण में होता है। अतः यह स्पष्ट हो जाता है कि कृतिका नक्षत्र अपने स्थान से 43/4 नक्षत्र (भरणी, अश्विनी, रेवती और उत्तरा भाद्रपद होते हुए) पीछे की ओर हट आया है। इससे यह सिद्ध होता है कि 960 x 43/4 = 4560 वर्ष पूर्व कृत्तिका में वसन्त-सम्पात हुआ होगा। यहीं शतपथ ब्राह्मण भी रहा होगा। इस प्रकार शतपथ ब्राह्मण का रचना काल ईसबी सन् से 2600 वर्ष पूर्व सिद्ध होता है। [19] वेद उससे भी प्राचीन हैं। अतः उनके अनुसार ऋग्वेद का काल 3500 ई.पू. के पश्चात कदापि नहीं हो सकता है।
4. लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक ने ज्योतिष गणना के आधार पर ऋग्वेद का रचनाकाल 6000 ई.पू. से 4000 ई.पू. माना है। उन्होंने विभिन्न वसन्त-सम्पात (Vernal Equinox, वर्नल इक्विनोक्स) के आधार पर यह तिथि निर्धारित की है। उन्होंने वैदिक काल को चार भागों में विभक्त किया है और विभिन्न स्तरों में वैदिक साहित्य के अंगों का उल्लेख किया है। तिलक ने प्रथम अदिति काल (6000-4000 ई.पू.) को माना है, जिसमें मन्त्रों की रचना मानी है। द्वितीय मृगशिरा काल (4000-2500 ई.पू.) को माना है, जिसमें ऋग्वेद के अधिकांश सूक्तों की रचना हुई है। तृतीय कृत्तिका काल (2500-1400 ई.पू.) को माना है, जिसमें चारों वेदों का संकलन तैत्तिरीय संहिता और कुछ ब्राह्मण ग्रन्थों की रचना हुई है। अन्तिम सूत्र काल (1400-400 ई.पू.) माना है, जिसमें सूत्र और दर्शन ग्रन्थों की रचना हुई है। इस प्रकार तिलक जी ने चार काल माने हैं। श्री तिलक का निष्कर्ष है कि यदि वेदों का काल 4000 ई.पू. मान लिया जाए तो पाश्चात्य एवं भारतीय विद्वानों के परस्पर विरोधी मतों में सामंजस्य हो जायेगा। इस प्रकार उन्होंने 4000 ई.पू. वेदों का काल मानने में बल दिया।

   लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक ने सन् 1893 ई. में 'ओरायन' नामक ग्रन्थ प्रकाशित करवाया। [20] यूनानी पुराणों में वर्णित ओरायन और कुछ नहीं, आग्रहायणी है, जिसका दूसरा नाम मृगशीर्ष है। श्री तिलक और श्री शंकर बालकृष्ण दीक्षित की गणना का आधार एक ही है। नक्षत्रों की संख्या 27 है। सूर्य का संक्रमण – वृत्त या राशिचक्र (Zodiac) 360 डिग्री का है। सभी नक्षत्रों की पारस्परिक दूरी समान नहीं है, तथापि उसको समान मानकर 360 डिग्री को 27 से भाग करने पर 13 + 1/3 डिग्री प्रत्येक नक्षत्र की दूरी सिद्ध होती है। प्रत्येक नक्षत्र अपने स्थान से समयानुसार पीछे हटता रहता है। एक नक्षत्र को एक डिग्री पीछे हटने में 72 वर्ष लगते हैं। इस प्रकार एक नक्षत्र को 13 + 1/3 पीछे हटने में (अर्थात् दूसरे नक्षत्र के स्थान पर पहुँचने में) 72 x 13+1/3 = 960 वर्ष लगते हैं।

   श्री दीक्षित ने शतपथ का एक महत्वपूर्ण अंश उद्धृत किया है, जिससे ज्ञात होता है कि शतपथ ब्राह्मण के रचनाकाल में कृत्तिकाएँ ठीक पूर्वीय बिन्दु पर उदित होती थीं। [21] आजकल वसन्त-सम्पात (Vernal Eqnmox) पूर्वा भाद्रपद के चतुर्थ चरण में होता है। इस प्रकार ज्ञात होता कृत्तिका नक्षत्र (कृत्तिकाएँ) अपने स्थान से 4 + ¾ नक्षत्र (भरणी, अश्विनी, रेवती), उत्तरा भाद्रपद होते हुए पीछे हट आया है। 960 को 4 + ¾ से गुणा करने पर अर्थात् 960 x 4 + ¾ = 4560 वर्ष पहले कृत्तिका में (शतपथ ब्राह्मण काल में) वसन्त सम्पात हुआ होगा, अर्थात् अब से लगभग 2500 ई.पू. शतपथ ब्राह्मण की रचना हुई होगी।

   श्री बाल गंगाधर तिलक ने ऋग्वेद **[22]** में उपलब्ध प्रमाणों के आधार पर वसन्त-सम्पात को मृगशिरा नक्षत्र में माना है और फिर आगे पुनर्वसु नक्षत्र में ले जाते हैं। मृगशिरा से कृत्तिका दो नक्षत्र पहले है। एक नक्षत्र की दूरी पीछे हटने में 960 वर्ष (लगभग एक हजार वर्ष) लगते हैं। मृगशिरा में वसन्त-सम्पात मानने पर ऋग्वेद का रचनाकाल 4560 + 1920 = 6480 वर्ष (लगभग 6500 वर्ष) पूर्व, अर्थात् लगभग 4500 वर्ष ई.पू. होता है। यदि पुनर्वसु में वसन्त-सम्पात मानें तो लगभग 2000 वर्ष और बढ जायेंगे, अर्थात् 6500 ई.पू.। इसको तिलक जी ने सुविधा के लिए 6000 ई.पू. मान लिया है। [23]
5. ऋग्वेद में ज्योतिष सम्बन्धी संकेत भी प्राप्त होते हैं। एक मन्त्र **[24]** में कहा गया है कि दक्षिणायन चलते-चलते सूर्य की गति कम होती जाती थी और मघा में पहुँचकर रुक जाती थी। फिर उत्तरायण-गति का आरम्भ होता था और फाल्गुनी में उसके वेग में प्रत्यक्ष वृद्धि का अनुभव होता था। उन दिनों सिंह राशि में सूर्य की उत्तरायण गति का प्रारम्भ होता था और आजकल उत्तरायण का प्रारम्भ मकर राशि में होता है, जो चार महीने बाद आती है। आज से 18000 वर्ष पूर्व उद्धृत मन्त्र (ऋ.

10/85/13) में संकेतित विषय दृष्टिगोचर होता था। 25 इससे सिद्ध होता है कि ऋग्वेद के कुछ मन्त्र आज से 18000 वर्ष पहले रचे गये, तो कतिपय मन्त्रों का रचना काल आज से 75000 वर्ष पूर्व सिद्ध होता है। [26]

(छ) ऋग्वेद –

ऋग्वेद संहिता का अध्ययन कर प्राप्त करे गये साक्ष्यों के आधार पर ऋग्वेद का रचना काल निर्धारित करने के प्रयास नारायण राव भवनराव पारंगी, सम्पूर्णानन्द तथा अविनाशचन्द्र दास द्वारा किये गये हैं।

1. नारायण राव भवनराव पारंगी [27] ने भूगर्भ शास्त्र को आधार बनाकर ऋग्वेद के रचना काल का निर्धारण ऋग्वेद की भौगोलिक स्थितियों का अध्ययन करके सिद्ध किया कि यहाँ उल्लिखित सप्तसैंधव प्रदेश (10. 136. 5) दोनों ओर से समुद्र से घिरा था। ऋग्वेद में वर्णित दक्षिणी समुद्र की कल्पना राजपूताने में करते हैं। ऋग्वेद के अनुसार सरस्वती नदी दक्षिणी समुद्र में गिरती थी। अतः राजपूताना ही दक्षिणी समुद्र रहा होगा। इन तमाम स्थितियों का अध्ययन कर पारंगी ने यह सिद्ध किया है ऐसी भौगोलिक स्थिति लगभग 9000 वर्ष पूर्व रही होगी। अतः ऋग्वेद की रचना का काल आज से 9000 वर्ष पूर्व था।
2. डॉ. सम्पूर्णानन्द [28] का मत है कि सप्तसिन्धव प्रदेश के उत्तर, दक्षिण और पूर्व में समुद्र था। [29] यह वह भूभाग है, जहाँ आज कश्मीर की उपत्यका, राजपूताना और उत्तर प्रदेश स्थित हैं। भूगर्भशास्त्र-वेत्ताओं का कहना है यह अवस्था आज से लगभग 25000 से 50000 वर्ष पूर्व की है। उन दिनों हिमालय समुद्र में से उपर उठ रहा था। पर्वत चंचल थे। पृथ्वी में बराबर भूकम्प आते रहते थे। आर्यों ने इस अस्थिरता को अपनी आखों से देखा था। इन्द्र की स्तुति करते हुये बारम्बार यह कहा गया है कि उन्होंने काँपते हुये पर्वतों को सुदृढ किया और हिलती हुई पृथ्वी को स्थिर किया। [30]
3. श्री अविनाशचन्द्र दास का मत है कि ऋग्वेद के कुछ प्राचीन सूक्त उस समय बने, जिस समय राजपूताना और संयुक्त प्रान्त में (जहाँ गंगा बह रही है) समुद्र लहरा रहा था। [31] वह टशेरी युग था। [32] इस प्रकार श्री अविनाशचन्द्र दास के मत से आज से 25000 वर्ष पूर्व ऋग्वेद की ऋचाएँ लिखी गयी थीं। [33]

(ज) ऋग्वेद के अनेक मन्त्रों 34 में ऐसे संकेत उपलब्ध होते हैं, जिनसे यह ज्ञात होता है कि ऋग्वेद के सभी मन्त्र एक साथ नहीं लिखे गये। एक मन्त्र में कहा गया है कि प्राचीन ऋषियों जिसकी स्तुति की थी और आधुनिक ऋषि जिसकी स्तुति करते हैं, वह अग्नि इस यज्ञ में देवों को बुलाये। [35]

(झ) भूगर्भीय तथ्य –

भूगर्भीय तथ्यों का अध्ययन कर कैलाशनाथ द्विवेदी जी ने ऋग्वेद का काल निर्धारण करने का प्रयास किया है।

1. कैलाशनाथ द्विवेदी का मत है कि सरस्वती जैसी विशाल नदी के साथ ही दक्षिणी सारस्वत (राजस्थान में स्थित) समुद्र का सूख जाना अथवा दक्षिणी सप्तसिन्धु का समुद्र तल से उन्मज्ज्न पृथ्वी के प्रकम्पों से नवीन हिमालय जैसे पर्वतों का उठना एवं नदियों के प्रवाह-मार्ग का परिवर्तित हो जाना, जैसी घटनाएँ ऋग्वेद काल से बहुत बाद की हैं क्योंकि इन घटनाओं का ऋग्वेद में उल्लेख नहीं हुआ है।[36]

(ञ) निष्कर्ष-

इन विभिन्न मतों को देखकर ज्ञात होता है कि ऋग्वेद एक काल का नहीं रहा होगा क्योंकि विभिन्न तथ्य उसे अलग-अलग काल में सिद्ध करते हैं। ज्योतिष से सम्बन्धित की गई काल गणना को अब तक सबसे ज्यादा भारोसेमंद साक्ष्य माना जाता है। तथा इस साक्ष्य को भूगर्भीय तथ्य, अभिलेख शास्त्र से सम्बन्धित तथ्य भी इस काल के आसपास इसे सिद्ध करते हैं। अन्य तथ्यों के आधार अस्पष्ट तथा कल्पना के आधार पर सिद्ध किये गए हैं जोकि काल्पनिक ही सिद्ध होते हैं। ज्योतिष सम्बन्धित किये गये साक्ष्यों के आधार पर अलग-अलग क्षेत्र के विद्वानों ने एक प्रकार का समय निर्धारण किया है। तिलक जी और शंकर बालकृष्ण दीक्षित ने नक्षत्रों के आधार पर, याकोबी ने ध्रुव तारे के आधार पर 4000 ई.पू. के आसपास वेदों का तथा 6000 ई.पू के आसपास ऋग्वेद का निश्चित किया है। अतः हम ऋग्वेद का काल निर्धारण 6000 ई.पू. से लेकर 4000 ई.पू. के आसपास के समय मान सकते हैं, क्योंकि इससे भारतीय और पाश्चात्य विद्वानों के परस्पर विरोधी मतों में साम्य बनाया जा सकता है। किंतु अभी इस क्षेत्र में और अधिक कार्य की आवश्यकता है तथा कार्य हो भी रहे हैं। नई खुदाईयों तथा नये अवशेषों वा नये अभिलेखों के मिलने से तथा भूगर्भीय तथ्यों की नई खोजों से ऋग्वेद के रचनाकाल में अभी नये तथ्य भी आगे आयेंगें, जिन्हें साथ लेकर ऋग्वेद का कालनिर्धारण करने की कोशिश करी जायेगी। किंतु अभी तक के उपलब्ध मतों से हम ऋग्वेद का काल निर्धारण

6000 ई.पू. से लेकर 4000 ई.पू. के आसपास के समय कर सकते हैं।

संदर्भ सूची:

1. संस्कृत साहित्य का विशद् इतिहास- डॉ. पुष्पा गुप्ता, पृष्ठ 19।
2. संस्कृत वाङ्गमय का बृहद इतिहास- ओम प्रकाश पाण्डेय, वेद खण्ड।
3. संस्कृत वाङ्गमय का बृहद इतिहास- ओम प्रकाश पाण्डेय, वेद खण्ड।
4. संस्कृत वाङ्गमय का बृहद इतिहास- ओम प्रकाश पाण्डेय, वेद खण्ड।
5. वैदिक साहित्य, संस्कृति और दर्शन- डॉ. विश्वम्भर दयाल अवस्थी।
6. संस्कृत साहित्य का विशद् इतिहास- डॉ. पुष्पा गुप्ता, पृष्ठ 19।
7. संस्कृत वाङ्गमय का बृहद इतिहास- ओम प्रकाश पाण्डेय, वेद खण्ड भूमिका।
8. संस्कृत वाङ्गमय का बृहद इतिहास- ओम प्रकाश पाण्डेय, वेद खण्ड भूमिका।
9. संस्कृत वाङ्गमय का बृहद इतिहास- ओम प्रकाश पाण्डेय, वेद खण्ड भूमिका।
10. संस्कृत वाङ्गमय का बृहद इतिहास- ओम प्रकाश पाण्डेय, वेद खण्ड भूमिका।
11. वैदिक साहित्य, संस्कृति और दर्शन- डॉ. विश्वम्भर दयाल अवस्थी।
12. संस्कृत वाङ्गमय का बृहद इतिहास- ओम प्रकाश पाण्डेय, वेद खण्ड भूमिका।
13. संस्कृत साहित्य का विशद् इतिहास- डॉ. पुष्पा गुप्ता।
14. अस्तमिते सूर्ये ध्रुवमुदीक्षस्वेति प्रैषानन्तरं ध्रुवं पश्यति वधुः।
    तत्र मन्त्रः
    ऊँ ध्रुवमसि ध्रुव पश्यामि ध्रुवैधि पोष्ये मयि मह्यं त्वाऽदात् बृहस्पतिर्मया पत्या प्रजावती संजीव शरदः शतम्। विवाह पद्धतिः पृष्ठ 111।
15. घाटे द्वारा ऋग्वेद पर व्याख्यान,संस्कृत विभाग दिल्ली विश्वविद्यालय।
16. The use of Dhruwa in the marriage ceremony does not belong to the time of Rigveda period, but to the following period. Therefore the Rigveda period of civilization lies before the Third Millenary BC- Z.D.M.G. VOL. 50, Page 71.
17. वैदिक साहित्य, संस्कृति और दर्शन- डॉ. विश्वम्भर दयाल अवस्थी।
18. अथैता एव भूयिष्ठा यत् कृत्तिकास्तद् भूमानमेवै तदुपैति तस्मात् कृत्तिकास्वादधीत। एता ह वै प्राच्यै दिशो न च्यवन्ते। सर्वाणि ह वा अन्यानि नक्षत्राणि प्राच्यै दिशश्च्यवन्ते।
19. संस्कृत वाङ्गमय का बृहद इतिहास- ओम प्रकाश पाण्डेय, वेद खण्ड भूमिका।
20. संस्कृत वाङ्गमय का बृहद इतिहास- ओम प्रकाश पाण्डेय, वेद खण्ड भूमिका।
21. एकं द्वे त्रीणि चत्वारीति वा अन्यानि नक्षत्राणि, अथैता एव भूयिष्ठा यत् कृत्तिकाः, तद् भूमानमेव एतदुपैति, तस्मात् कृत्तिकास्वादधीत। एता ह वै प्राच्यै दिशो न च्यवन्ते, सर्वाणि ह वा अन्यानि नक्षत्राणि प्राच्यै दिशश्च्यवन्ते। शत.ब्रा. 2.1.2.2 और 3
22. (1) न्याविध्यदिलीविशस्य दृलहा।
    विश्रृंगिणमभिनच्छुष्णमिन्द्र ॥ - ऋग्वेद 1/33/12
    (2) यद्ध त्यं मायिनं मृगं तमु त्वं माययावधीरर्चन्ननु स्वराज्यम् ॥ - ऋग्वेद 1/80/7
    (3) शिरोन्वस्य राविषं न सुगं दुष्कृते भुवं विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः। - ऋग्वेद 10/86/5
23. वैदिक साहित्य का इतिहास- कपिल देव द्विवेदी।
24. सूर्याया वहतुः प्रागात् सविता यमवासृजत।
    अघासु हन्यन्ते गावोऽर्जुन्योः पर्युह्यते ॥ - ऋग्वेद 10/85/93
25. संस्कृत साहित्य का विशद् इतिहास- डॉ. पुष्पा गुप्ता।
26. संस्कृत साहित्य का विशद् इतिहास- डॉ. पुष्पा गुप्ता।
27. वेद दीपिका, डॉ. बाल शास्त्री, डॉ. रमाकान्त पाण्डेय।
28. वैदिक साहित्य, संस्कृति और दर्शन- डॉ. विश्वम्भर दयाल अवस्थी।
29. ऋग्वेद के निम्नांकित मन्त्रों में चार समुद्रों का वर्णन हुआ है।
    समुद्रांश्चतुरोऽस्मभ्यं। - ऋग्वेद 9/33/6
    चतुः समुद्रं धरुणं। - ऋग्वेद 10/47/2
30. यः पृथिवी व्यथमानाम्दृंहद्यः पर्वतान्प्रकुपिताँ अरम्णात्। ऋग्वेद 2/12/2
31. एकाचेतत् सरस्वती नदीनां शुचिर्यती गिरिभ्य आ समुद्रात्। ऋग्वेद 7.95.2
32. As some of the ancient hymns of Rigveda contain evidence and indication of different distribution of land and water in sapta sindhu, we are compellerd to go back to the ancient time, when such a distribution actually existed. The result of geological investigations got to

show that modernrajaputana was a sea in teritiary era... and the gangetic through to the east of the punjab was also a sea upto the end of the pleistotence epoch. As there are distinct refrences to these sea in some hymns of Rigveda we cannot help assigning to the time when such distribution of land and water actual existed. There in also undoubted evidence to show the man flowrished on the globe and in india the pleistotence epoch. (Rigvedic India, Page 578-579)

33. वैदिक साहितय का इतिहास, कपिल देव द्विवेदी, पृष्ठ 40-41।
34. वैदिक साहित्य, संस्कृति और दर्शन- डॉ. विश्वम्भर दयाल अवस्थी|
35. अग्निः पूर्वेभिर्ऋषिभिरीड्यो नूतनैरुत।
स देवाँ एह वक्षति ॥ - ऋग्वेद 1/1/2
36. वैदिक साहित्य, संस्कृति और दर्शन- डॉ. विश्वम्भर दयाल अवस्थी|